१

द्वितीयेरात्रौ येषी चेष्टाकरे: सासकरणरा
गेरकंपै पंको चकरै॥ बखनामराक्षसनी
ग्रह्यौजानीयौ॥ ताकोउपाव॥ औषदी पा
पदीकंज उषीर पीपल मंजा छेरीकेम
त्रमैबांटै लेपकरै बालकके अंगकुं पीज
काकुकरीकेबालाकीअपदीजा सहमैमि
लाकरि मंत्रॐनमोभगवत्यै भीषण
रुपैमिषणा धारणा न्म: इमंत्रवेनी
ग्रह २ बालकमुंच २ स्वाहा ॥ तीयरात्री
पेषी चेष्टाकरै बालक

श्रीगणेशायनमः अथबालचिकित्सालि.
ख्यते श्रीचेष्टा अभ्यकरे श्रीवंशे ठीकरेहोय
मुखलालहोय अंगउद्वेगकरे जलपानन क
रे दुधनापीवै धावनीनामराक्षसनीयह जा
नीये ताकाउपाव मजीठ तगर लोद दारहद
मैनसल इनसमकोलेपकरे बालककी
अंगकु उतारेकीवेधी मध मछी सुगंध
फुल इनकीबलीदे ताकोमंत्र ॐनमोभ
गवतेधावनी पैसकामुंकचाल्यै नमः ए

मंत्रबलीचहन्ह बालकमचमचस्वाहा १
तोम:

२

ताको उपाव लिख्यो गोमूत्र मैं वात के वालक
के अंग को लेप करे ॥ उतारे की विधी भात सा
ग: पाव: मद्य मच्छी सम को वलीदे नीव
का पान सिरपै ॥ हे रनके वाल इनको ध
परे वालक कुं मंत्र: १ ॐ नमो भगवते कां
को ले ... स्वाम रों मुर्षिता ये इमं वलीं गृ
ह्न वालकं मे च रक्षा रामकृष्ण जी सहायक ॥

पंचम रात्री अंश्री षष्टाकरे आपनी माता को औ
र देषे जंभाई आवे रोवे आकास कुं चितवै हा
थ अंगुली ... रेमन ... ताकै

होवे शरीतक्याकरे नेत्रमुंदा रहेइ धनाजीवे ॥
घरीली नामरा त्तनीग्रहजा ... ताको उपाव
हाथीकोदात गायकोदांत नाग ... प्रार ... ज्यान
रवहे रीकैमत्रमैबाटकर बालककोमुंपरले
पकारै : ... वकेपातआदमीकेनरव प्रारप्यो इम
कीधपदै मंत्र॰ ॐनमो भगवत्यै घटिली पैमूमे:
कधपधाधारे रोपेनम: इमंबलीग्रह रबाल
कमुंच रस्वाहा: ४ चौथीराजी ... चेष्टाकरै
मुखत: केनत्र्यावे दिशानकुचितवै सरीरउद्दे
... तालकाले नामराक्षसनीग्रहजानीये ।

१३

ह्र बालकमंच २ स्वाहा ॥ सपूमीत्री अ्रसीचेष्ट

करै जिद करै रोवै दिशाकुं चितवै जीभ लाल होय

नवनकोकान ॥ मरा दस्नीग्रह जानीये ताकोउ

पाय ॥ वच · हिंग · ल्हसन · सरसु · वासीपानीमे

पीसकरलेपकरः ॥ उतारा कोविधी ॥ खिचडी

खीर मंत्र १ ॐनमोभगवत्यै त्रिकोस्किायैत्र

नेत्रायै त्रिशूलहस्ते इमंवलीग्रह २ बालकमंच २

स्वाहा ॥ अष्टमीरात्रीश्रेणीचेष्टा करै ॥ शरीर उद्

गकरै स्वासकरै रोवै उरपै मुठीबांध्याकरै ताअ

जामिहचीरात्रसनीग्रहजानीये ॥ ताकोउपाय

उपाव. मीठेकेसीगकी छिलक. लोद हड़ताल
मैनसल समकुंपानीमे जीसकर बालककेअं
गकुंलेपकरे उत्ताराकी विधी. दुध.भात.गुड़ ला
लचंदनकी धपड़ी एर्णी मंत्र ॐ नमो भगवते
हंस्पेश्चकुंशधारी पांगगजारुठे इसंवलीयन्त
बालकमुंचस्वाहा: छठीराखीबालककेसुरी चेष्ठा
करे माथोपकड़े तो धुरावे कागस्यरगेवे।।सरीर
मैगंधआवेमलमुत्रका होय तबउसमीनाम साल
सनीग्रहजानीये।।ताकोउपाव सरस्योवधई
कतकीगागसमैपीपकेबालककेअंगकुं लें
पकरे सिंहकेनखकी धूमदे।। मंत्र इसवलीय

आदिवालकमासचकित्सालिख्यते १ प्रथममा
सबालकअैष्णीचेष्टाकरै कागस्वररोवेमीच
कीघ्रीवासआवै अंगमेरक्तमुत्रआवै नेत्रासुद
खिनहीं॥ ताकोउपाय॥ तीनअंन्नकीखिचड़ी
माछमछीका रक्तचंदन रक्तफुल पीलापत्र
मधु दधि नरिश्राकु वलीदे उतारकीविधी
मीठाकेसीगकी धूपदे दांतनख मीठतेल
कादीपकउतारा करैमध्यानमैं ताकोमंत्र १
ॐनमोभगवत्येकलकुलंभपकरिवली
गृन्हु २ बालकमंच २ स्वाहा ॥ द्वितीयमास

वालककेअंगकुलेपकरे वंदरकेवाल॰आदमीके
नखकोधूपदे चंदनगंधदे मंत्र॰ ॐनमोभग
वत्येआजिमेरवमाहेषोरुठे शांतिहस्ते इमंबली
गन्ह२वालकमुंचस्वाहा। नवमीरात्रीअनुमाने
शाकरे रातदिनरोवेशरीरमेविगंधआवे नवरोध
नीनामरादलगीग्रहजानाये ताकोउपाव॥कुटकी
राल॰सरस्यो॰वच॰ समभागले पानीसेपीस
करिवालककेअंगकुलेपकरे॥वालकउलो
रव इनकीधूपदे उतारकीविधी॥मंत्र॰ ॐन
मोभगवत्येकुंदेइ निर्मलपदवनीछिपतामणी

मामितइमवलीगन्ह२वालकमुंचस्वाहाइति

धस्यावै गंडके पीछे गंधस्यावै ताको उपाव॥
भातषीर·घाग·दुध·सतनाजा·घासुकी धुप
करै मध्यानमें बलीदे पूवदिशाकू मंत्र॥ उं
नमो भगवत्यै ओतभी बलीगन्हे बालकमं
चरस्वाहा ५ | ४ चौथे मासपिंगलानाम दत
नो बालकग्रहत बकैसी चेष्टा करै: दाहज्वर
कंप: दुध नाही पीवे पीनैस्वरोवे: मु
खसुका होय पीलाहीधगेरे वारवार रदहो
य तवबालकका उपाव कीजै नही अप्राप्ति
कहीये: स्वरोवे: सोतवांमुरहोय मरबदुःख
सहोय दुंगधस्यावै ताके उपायजानीये॥

श्रीचेष्टाकौ प्रातिपीत्ताहोय स्योत्रनहीच
लैमुत्तभुकाहोय दुधपीउापीवै रहोय स
देहायतोमुकतनामरतनावालकगहजानी
पे ताकोउपाव रिवचडी लडुकपारका रक्त
चंदमपक इनकोवलदे नीवकेपत पलास
केपत लसन इनकाधूपदे ताकोमंत्र ९
ॐनमो भगवतेमुकतायरक्तामये मामपेउ
पतभुभकरी हमं ग्रीग्रनटु रवालकंचं रे
स्वाहा २ त्रितीयेमासगेतनीनामरतनावा
लकगहजानीये श्रीचेष्टाकर: रोवै: त्रि

दकरै: वारवारचौकै वहुतप्रावै मरवमेदुग

मंत्र ॐ नमो भगवत्यै कुंभकर्णयै कामतामं
त्रे गगामिनीमद्दः इमंवल्लीमिन्ह २ वालकंमुं
चं २ स्वाहा ९ १ दशमेमास नामषष्ठी नामंत्र तनो
वालकग्रहः नव श्रेष्ठी चेष्टाकरः नेत्रमं देह पो
ष्टातीदउद्वेग करं स्तहारं नलेवे ताको उपाव मा
तपीला एता मषोमधः वध घट धजापी
ली मगंध फुल फल दीपक चौमुखा मषा
नसमै उत्तर दिशावली देधेने तीनतांई मंत्रः
ॐ नमो भगवत्यै तामषष्ठी रसभद्रे इमंवली

मंत्र २ वालकंमुंचं स्वाहा १० षष्ठी

बालकमुंच स्वाहा ७ प्रीतारामसहायकरै:
८ आठमास रजनी नाम पूतना बालकको गहै:
तबश्रीप्रीचेष्टाकरै · मरक्षहोय · शरीरसुकाहि
य श्वास:जिह्वानिकसे · कंपे · रोवै · मरवसुखा
होय तोको उपाव पनमेघ्मरहीकरै श्रोरकेक
रनाकानहीं । ९ नवमामासकुकननामपूतना
बालगहे तबश्रीप्रीचेष्टाकर: तातस्तनरोवै प्रा
तीरमैंवोआवे दुधथोड़ापीव: तांकाउपाव॥
खिचड़ी · भात · मछी · घिरत · दुध · मइवे · तिल
[illegible]

६ छठवर्षजमननामपूतना बालककोग्रह:
तवश्रेणीचेष्टाकर: रात्रदिनवहुतरोवै श्वा
सलेवै ताको उपाव मातपिचड़ी मध.
मछी पड़े रती कपूरके लड्डू तेलकादीवा
इनकीवली गोरोचन गोकेनखकीधूप
पंचभागअस्नानकरावै चौराहेमेंवलीदेनी
रात्रीकु मंत्र ॐनमोभगवतेजमायजम
राजाय इमंवलींगृन्ह २ वालकंचस्वाहा

७ सातवावर्षजनपेरनामरत्तनावालक
कोग्रह: नवश्रेणीचेष्टाकरै: उरतेमूत्र

ममवसीग्रन २ बालकमंच २ स्वाहा ॥ ४ ॥

१ पंचमवर्षमतंकनीनामभूतना बालककोग्र
हः तवग्रेशरोचेष्टाकरै नेत्रमंदेहोय दुर्बलहो
य मुखक्रका होय मुखततावहुतहोय स
मउहगकर: तांकोउपाव धीर खिचडी वा
कुली वडे. मध मखी दुध ल्हसन मरस्यो
कीधपकरणी तेलाकादीवाकरणा पंचभाग
सूत्तानकरणी उत्तर दिशावलीदे रात्री कूं मंत्र
ॐ नमो भगवती मतंकनामंथे नमः इमंवली
ग्रन्ह २ बालकमंच २ स्वाहा ॥ ५ ॥ शालगीवतई

छाकरः वारवाररोवः नब्रनकरै उसासकरः ता
काउपाव खिचडी खीर भात सुहाली चंदन फु
ल माधोराज्ञीवलीदे धूपगकोधूपदेः मंत्र
ॐनमोभगवत्यैवलिवातनीवलीगन्ह गन्ह वा
लकमुंचमुंचस्वाहाः ९ नवमवर्षजलप्री
[illegible] तस्ता नामपत्तना बालककोगहः तनमै
षीचेष्टाकरै जुरहोयदुर्बलहोय ताकोउपाव
भातपीला भावकेफुल पती दही वलीदेरात्री
कूल्हसन कुल्की वघ सरस्यौ हाहिकताहात्रै —८
वकापात मन्त्रषकावाल ईनकोधूपदे ताकोमं
त्र ॐनमोभगवत्यैनवलीगन्ह बालकमुंच ला
जसोन्येः

तुका होय सुहार नले ताको उपाय लिखे

मछी दुध दही संसार का गाल के पेट वल दे

कि काधूप दे तेल का दीपक मंत्र १ ॐ नमो

ॐ कुमारां डिनि भगवत्यै रत्ननाम उते स्वाहा

ॐ समागंधहनन ॐ सकल केगधस्वाहा

मध सरस्यो ले इमकर ले हमार बाल ॐ

नमो गर्भ नाति जातवेदाय इमं नली महे

बालकं मुंचर ठंठं स्वाहा १ अथ मालखैव

लिखा ... माचालक कोश: नवपैपीचे

१२

११ ग्यारवावर्ष कॊलिका नामपतनावालिकौग
हे: नवश्रेपीचेष्टाकर: श्रीविदुरवेष्टाकर:
कागन्वरसेवे: नाकाउपाव भातनिता मध
मढुवापरी पडे धाग सुहाली गड़ दुध इनको
वलादेसर्त्मानीक्के पात इनको धूपदे सीवा
वाल: मंत्र १ ॐनमो भगवतेकालिकापे
इमं वलीगृन्हे वालक मुंचर स्वाहा: ११

१२ वाहरमेवर्ष वाघणी नामपतनावाले
कौगहे: नवश्रेपीचेष्टाकर: विनाष्टषपा
य दुर्वलतन भयकुया होवत गायकोपग

१०दृष्टा मर्षिदे गुत्तानाम पतना बालहीग्रहः त
वसे प्रपीवेष्टाकरः म्रनबंधहो पकलीवहत श्वावेक
वीबंधहोय प्राहि उद्वेगकरः श्वहारनदेवः मितंती
हो पलोटत्तां के रुदनकरे निउत्ताहोय श्रोस्वो
रवैन बोलैः बारबार उठउठ भागे जाउं जाउं कहे॥
ताका उपाव मछीदहीदुधधानां कालना पडेप
रीके नेरके फुल कवल केशर तगर गुगल इनकी
वली दे श्वादमीके नखकुटकी गुगल इनकी धूप
दे दिवाकर पंचमाग अर्कालकानि मंत्र डोन
सो मन्त्र लेवे वहुतारही इसंवनामग्रहः बालक

मुंचरक्षाहः १०

घातेफुल कुसुमचंदन इन करि बलीदे सरसु
नीवकेपात इनकीधूपदे पंचभाग स्नान
करावे ताकोमंत्र १ ॐनमोभगवती बापली
इमंबलीगृन्ह खालकंमेचरस्वाहा: १२
श्रीकृसजीसहाय इतिश्रीबालचकित्सा
लिख्यतं परगीम संवत् ... जेष्ठ कृस्न १ चंद्र
10 दिने पठनार्थ गिरिहाला पाधा तप पुरी पुरा
तैलार दोजना तदोर दोदितन तिंधना तम
... ...

पत्रसंख्या १३

मुकुन्दस्यपद्

कातवि

कि

सा

तेजोऽपहोऽनेकात्मानेकदर्शनः सतागमो विधेया
त्मा विजितात्मा धनंजयः २५ असंख्येयो विशि
ष्टात्मा ब्रह्मण्यः शोकनाशनः महतेजो महा
कर्मा महायज्वा महाक्रतुः २६ वैकुंठभवनातर्को
वेदांगो वेदवित् दक्षिणः सहिष्णुः सात्विकः शूरो
वेगवानमिताशनः २७ रोहितः परमस्त्रेयोम
हाभागः प्रतर्दनः सानगम्यो महासानो ध्र
धानेकभिरव्ययः २८ सोमपः सुव्रतो जोष्णावि
मुक्तो भूरिदक्षिणः मनमन्तामहोजा स्थव
सुरेता सनातनः २९ अनिर्वेशी शतानंदोति

हय० ष्कृतात्मा कृतागमः दमोदमपितादंडो योजीशो योजव
लमः २९ अभिप्रायः परंज्योतिः सदामर्षी धनुर्द्धरः शब्दा
तिगः सहस्रार्चिः कृतकर्मा कपिध्वजः ३१ स्तोत्रप्रियो
महाविष्णुः सर्वशस्त्रभृतांवरः सुलभो दुर्लभः स्वा
मी समावर्त्तो दुराशयः ३२ दुःस्वप्ननाशनो वीतभयो भी
मपराक्रमः ऊर्द्ध्वगः सत्यधर्माचारी स्वयंजातो जगद्गुरुः
३३ अनंतशीर्षोनंताक्षोनंतपादस्त्वनामयः अनादिरा
दिरादित्यो ह्यात्मवान्नात्मवर्द्धनः ३४ आरोग्यकारी
ह्या २ आनंदो दीर्घश्चाकाशरूपवान् इंद्रेरापूजितश्चंद्रुरिंद्रा
दिसुपूजित ३५ इंदुलोकाश्रयस्त्रीश ईशानश्चेशव
लमः उन्नतास्फश्चोन्नतांघ्रिरुत्पलोप्युत्पलाश्रयः ३६

उकाराकारसंतुष्टेवेदेयगतिःसुखी ऊर्द्धगामीऊर्द्ध
देहऊर्द्धकेशश्च ऊर्द्धदृक ३१ ऋणहन्ता चऋरूपो
ऌऌसर्वांगभूषितः एकएकस्वरूपश्च एकचत्रकरा पा२
न्वितः ३८ ऐश्वर्यधारीऐश्वर्यऐरावतसमन्वितः ओं
कारकारणंब्रह्म ओंकाराकृतिवर्द्धन ३८ औअध 12
रद्धयावीतअंओमंत्राद्यरोपतः कक्षःकापालिकः
कुब्जःकेशवःकमलेक्षणः ४० कदंबवासीकंसा
रिःकमठःकेशिसूदनः कांतकांताप्रियःकामका
लीयमदभंजनः ४१ कालिंदीक्रीडनःकालःकुब्जि
काप्रीतिवर्द्धनः कामिनीमोहिनाद्दीकामिनीव

का१

६

२

रुप० मधांकः४२कम[illegible]लाभ[illegible]मःकल्कीकलकीचक
वाग्वमत कुंडलीकिंकिणीजालमंडितकुटिलाल
यः४३केकिपक्षधरःकंबुग्रीवकुवलयार्तिदःको
तुकीकाननचारीकामुकःकमलासन४४कला
निधिःकलाधारीकुमारगणसेवितः कापिलाच
रणसक्तः कपिलःकामनाप्रदः४५कुंकुमांशुक
शोभाढ्यःकाश्मीरतिलकप्रियः कोटीरभूषितः।
प्र कौलरूपःकोलांबुदभः४६कौरवार्तिप्रदःकामः
काराग्रहविमोचनः कल्पोतकलनःक्रूरःकलि
कालनिवर्तकः४७कृतकृत्यश्च कृत्याशीःकाला

तिः कालसूदनः कर्मैकवरदः कर्मसाक्षीकल्मषना
शनः ४८ कामवीजस्वरूपाढ्यः कामवीजजपोद्य
तः कामवीजमन्त्रोत्साही कामवीजफलप्रदः ४९
खरांशुः खंडपरशुः खड्गखेटधारकः खेचरः खर्प क
रानंदी खरहन्ता खगेश्वरः ५० खंडमुंडधरः खेटः ख
वासी खेटकप्रियः खेचरीगणसंसेव्यः खवर्गाज
पतोषितः ५१ गोपालो गोमयो गोप्ता गोपतिर्गोम। 13
तीपतिः गंगाधरो गिरीशश्च मत्तसेव्यो गणेश्वरः
५२ ज्ञानरूपो गिरिचरो गयावासी गणाश्रयः गण
ता तीतो गोलजाति गैंगानप्रियो गुणी ५३ गुणीसेव्यो
गदहरो गांगेयश्च गदाधरः गोलचारी गोलरूपी

कृप० गिरिलोमारलोगुहः ५३ घनध्वनो घनगतिर्घटाह
स्तो घटाकरः घण्टामानवृषुर्हुरो घनवाहनसे
वितः ५५ घर्मघस्मरपतिर्घस्मचारी घस्मरतीश्वरः
घातहारी घातपरो घनमंडलतोषितः ५६ ङांतो
ङेशो ङकारांतस्थपलङ्गपलाश्रयः चंद्राश्र
ङ यश्चंद्रधरश्चंद्रमंडलभूषितः ५७ चलत्य ताको
वंडाद्रिस्थश्चंडीशवल्लभः चामीकरभ्रमश्चं
डश्चिंताध्वंसश्चराचरः ५८ चित्रकलारचितश्चि
त्यश्चारूभूषणभूषितः ६० छिन्नदैत्यच्छिन्नः
लो पापच्छलहारीछलान्वितः ६१ छिद्रच्छोभिमच्छ
छिन्नमाराद्धिन्नरपच्छिन्नच्छिन्नसेवितः ६२ चमत्कारश्चि

श्चैत्रश्चैतन्यो चेतनाप्रदः॥ चमरीपालनासक्तश्चमारवनतोषि
तः

छ[?]कारान्तरभूषितः ६१ जगदाशी जलत्राता जग कर
त्त्राता जगत्पतिः जगज्ज्येयो जगत्सेतुर्जनलोकसुखा
रः ६२ जयकारी जराहर्ता जितेंद्रो जांबुवल्लभः जग।
न्नाथो जगत्पूज्यो जंभारिरिपुमर्दनः जांबूनदांगदो
जाप्यो जपपूजापरायणः जलदेवो जलस्थायी जन्म 14
मृत्युविनाशकः ६४ झं झावायुगतिर्झिल्लीझिल्लीगण।
टी३ निषेवितः झिल्लीशब्दानुमोंच झंझागुलिपदोक्षितः।
६५ ञेश्वरो ञप्रियो ञांतस्थो टिकासनसंस्थितः टी
कारखंकधारी च टीकाटीप्पणकारकः ६६ डाकि
नीसेवितो डिंडीरवतुष्टो डवन्मुखः डमरुडमरुश्री।

८
ह्य०

ताडिमरेशोडमर्गोबान्द॥७ क्षा शब्दरतोढाढीठढस्तु।
ल्यांगुलिप्रियः ण वर्णेशाप्रियोणेशो ण कारान्दरव
त्तूमः ८ त्रिपुरे शैत्रन ऋशस्तेजो वादनतत्परः
तमस्तामरसेद्ध स्फतेत्रेशास्त्रिजटीतनुः ९ ताराधि
पेश्वरस्तप्तस्तमोहन्तीतमोरिपुः तमोरूपस्त्रिवर्गे
शास्तपसांफलदायकः १० स्थविरस्थंडिलस्थाणुस्थू
लस्थलविवर्द्धनः स्थलरूपस्थलोत्साहीथकारे
शाग्रपूजितः ११ दुर्गमोदेवदैवेद्रोदेवकन्याग्रपूजि
तः दुर्जयोदैत्यदमनोदेवनायकवंदितः १२ तादो दा
मोस्यहतोवदुर्सैयोदुरतिक्रमः दामोदरोदयाधी

शोद्वादशात्मादयान्वितः१२दुःखवंशहरोदोग्धादौर्गोदुर्ग
तिनाशनः धनदेष्टो धनाध्यक्षो धर्मराजो धनप्रदः१४
धर्मबंधु धर्मनिधिर्धीरादर्शो धुरंधरः धाराधरो धुरी
णक्षम धर्मतेज्ञो धराधिपः१५ धूर्जटिर्ध्यानवासी च
धर्मात्मा धर्मवत्सलः धराभृद्धन्वनो धर्मी धर्मकृ
फलप्रदः१६ धैर्यवान् धैर्यकर्ता च धैर्यदो धैर्य 15
वल्लभः धैर्याधीशो धैर्यदर्शी धैर्यहारो धैर्यप्रदः
१७ धीमुतो धीप्रदो धैर्यधार्मिको धर्मवर्द्धनः नरना
थो नरस्तुत्यो नरनारायणप्रियः१८ नारायणो नील
लोचनो नेमिर्गामी नमप्रियः नमोंतो नमितारातिर्नेतागा
नीललोहितः १९ नादो नादपतिर्नादो नादविंदुप्रका

२
ह्य॰ शकः नादरूपो नादमयो नादस्तुतिपरायणः ८१ नादब्र
ह्मलीलाकृन्नाट्यो नटविद्मनोत्सुकः नवीनगुण।
संपन्नो नवरूपो नैकरूपवान् ८२ नीलांभोजनिभो।
नम्रो नरनारीकुलोत्सवः परश्चातापरध्वंसी शरण।
तार्तिविनाशनः ८३ परात्परः परंज्योतिः पुरारिपुर
संस्थितः पूर्णानंदमयः पूर्णः पीवरांसः पुटेशयः ८४
पटेलवर्णः परिमातेजः पूर्णोऽव्यरेश्वरः प्रीतः प्रियः
प्रेमकरः प्रमत्तः प्रणातेष्टदः ८५ परमेशः प्रभुः प्रांशुः
पाटलेशः परात्मवान् पावनः पिच्छलः पुष्टः पवित्रः
पापनाशनः ८६ प्रपारः पारदः पीनः पीतांबरपरा

यणः पिशुनः प्रीतिपदप्रः परमः सौप्रकाशकृत् ८७

परमाह्लादकृत्याश्च प्रजापालनतत्परः प्रेमगर्भः प्रेम
मयः प्रमदाजनशोभनः ८८ प्रकाशितस्वरूपश्च प्र
ह्लादप्रीतिवर्द्धनः प्राचीनवाक्यनिरतः परः काव्यमनो
त्सुकः ८९ परात्परः परामर्शः परामर्षणतत्परः प्राचीन
कर्मकुशलः प्रमोदी प्रमथाधिपः ९० प्रमेयः परशोभा
ढ्यः पारंगतापराजितः पुराधिराजः प्रचुरः परकाय 16
प्रवेशकृत् ९१ पंडितः पटुबुद्धिश्च पातकारिः पयोम्
यः पताकीपवनासक्तः पावकाशनकारकः ९२ पा
वनैकमतिः पापपथाभावसंस्थितः फलदः फल
भोक्ताचफलिनीशंकलात्मकः ९३ फुल्लदंभोजनिल
यः फुल्लदावरमञ्जः स्फुटाकारः स्फुटज्योतिः स्फु

१०

टिकावलसंस्थितः२४स्फूर्जद्दृहस्तविस्फीतःस्फीतभा
नविवर्जितः वालोबालप्रियोबाग्मीविबुधोविबुध
प्रियः२५वालालिर्बर्वरध्वंसीविलब्धांतहरोवली॥
बुधोवृहस्पतिर्वातोवृहदश्वोवृहस्पतिः२६वरोव
रेण्योवरदोवरदानकृतोद्यमः वीरोवीरासनस्थो
वरवंशसमुद्भवः२७वादीवादरतोवादवत्सलो
बंधुवर्जितः बीभत्सनपरोबंधुर्बल्लकोबाद्यतत्प
रः२८वेदैकज्ञाननिरतोवेदविद्याविशारदः वे
दीजनपरोवैद्योवंदीजनफलप्रदः२९वाग्मीवा
[illegible]

ग्रं

जोभावैःकविशेखरः१ ॥ भर्गोभद्रगुर्भोभ्यस्तपोभगस्वायी
भभालकः भूमिभीरधरोभूमिभूधरोभास्करार्चितः१
भूमीरुहफलासक्तोभ्रन्तोवल्लभोभगः भगमाला
जपकरोभगमालाफलप्रदः२महोज्वलोमनोहा।
रीमहानादोमहामृतिः महाकालोमहाद्युतोमनो
गामीमनोभवः३मंदारमालाभरणोमेरुमंदिरसंन्नि
भः मानदोमल्लहामल्लोमार्तंडोमुंडमंडितः४मोदितो
मधुराहरिमाननीयोमनोमयः महालसोमरस्तुलो
मधुकैटभनाशनः५महावराहोमीनेशोमारेशोपि
पुरोहरः माधवोमेदिनीशाभ्रमुराशिवरदोमुकः६

५० मुकुंदो मुररीशश्च मेधावी मुशलायुधः माल्यवान्म
दनो मारो मरालफलदो मरः ९ माधवीपलनावासी
मानतीयो महेश्वरः मदनो मोदको हारमारुतो मघ
वार्चितः ८ मैनाकवासी मरवरूत्तमस्थाश्रिनिवेवि
तः मंदराचलसंसेव्यो मंदराचलसंस्थितः ९ मंदो मं
दगतिर्मैशो मनोगामी मदालसः मोतदो मोक्षहर
णो महामंगलदायकः १० मांगल्यकरणोत्साही मं
गलो मंगलालयः योगी योगाश्रयो योगकारणो यो
गवल्लभः ११ यालिकोयसफलदो योगिनां हृदय
स्थितः प्रज्ञाप्रसेश्वरोपातो वाजीयामलनायकः १२

रत्नमुद्र सभां यज्ञो यो निमंडलम ध्यगः रत्नधारी च मंत्रेशी
युगलेश्वर पूजितः १३ योगिनी चक्रमध्यस्थो युगधर्म प्रवर्तकः १
४ पुपुत्सु जयदो योऽज्ञायजना चार तत्परः १४ पीतो
यज्ञोक तिलको यमलोक विनाशनः रामो रमण
शीलश्च रत्नपीठांतर स्थितः १५ रत्नमूली रत्न
तुंगो रत्न कंकणभूषणः रत्नमाली च रत्नाढ्यो
रत्नभानु रतिप्रियः १६ रत्नांगद लसद्बाहू रत्न
पादुकधारकः रक्तो रोहिणीशश्च रोगण
विनाशनः १७ रविचारो रमापूज्यो राधारमः
रामसख्यकृ रमणीपरस्वरूपाढ्यो रमणीयगु
णान्वितः १८ रमणीय विभूषाढ्यो रमणीयफलदः 10

कृप९ लक्ष्मीवान्लोकविध्वंसी लसत्कांतिश्च लोकभत्र
९ल्लीलाकारी लतावासी लास्यकृल्लोमशोनिगुः
लोकांतकहरो लास्यो लास्यक्रीडानुमोदितः २०
लिंगेश्वरो लिंगदाता लज्जावीजाश्रितो लवः
लज्जावीजजपासक्तो लज्जावीजपरायणः २१।
लालितो ललिताचारो लोकरूपो ललंबुसः ।।
लाभदो लाभकारी च लंकाराहर भूषणः २२ वा।
वामजो वरो वार्त्तो वा वाचालो वाक्पतिप्रियः वा
रुणो वालिशध्वंसी वीणावेणुधरो वरः २३ वाम
नो वीरभद्रेंद्रो विज्ञानाधकपूजित वेदवादर

श्रीमन्नाय
यनमः राम
रामाः इति [illegible]

रामराम॥ श्रीमतेरामानुजायनमः॥

19

तोवादीना स्वरूपोविमान्मत्सर २४ वार्तिकोवा
र्तिकामोदोवावदूकोवलान्वितः विनीतोवनि
तासक्तोवामदेवस्तुतिप्रियः २५ वेदांतफलदो
वेद्योवरज्ञानपरायणः वीरभद्रेश्वराधीशो
वीरोवीरविनाशनः २६ शांतवेषप्रदः शांतः
शांतपशांतिवर्द्धनः शशी शोमार्करः सुश्लो
सुश्लोकवस्त्रसमावृतः २७ सुविकरः सुफरूप
श्रीपतिश्रीयुतः श्रुतिः श्रुतिरूपः श्रुतीयाश्च
श्रुतिमार्गणतत्परः २८ शिपिविष्टः शिविःश्रे

ष्ट:शारस्त्वंद्वनिग्रः शुचिः शिष्टाचार: शुभाचार:॥
शिष्टसः शिष्टसेवितः २८ शेषशेखरसुस्थायी
शिवरूपः शिवप्रदः शैलरूपः शैलसाम्नीशैल
वासी चशैलयः २ शालग्रामशिलावासी शाल
ग्रामशिलार्चितः शालग्रामशिलाप्रीतः शा।
लग्रामशिलामयः ३१ षडाननः षड्भुजः षडास्त्र
पप्रवर्तकः षड्रसास्वादसंतुष्टः षोडशार्चकर
मलः ३२ षड्ढिद्रियनिरोधी च षड्ढिंद्रियपरायणः
सर्वेंद्रिय...[illegible] ...विषयप्रदः ३३ स

२०

१२

१५

हय०

रः सूरिः सुखाकारः सुखदः सौम्यवल्लभः स्वरः
स्तुत्यः स्वधास्वाहा सानन्दः साधुवंदितः २४ साम
वेदरतः सामसामगानमनोत्सुकः समस्तसाधु
केशानः समस्तसुरवंदितः ३५ समस्तदैत्यवंश
घ्नः समस्तकुलशेखरः समस्तजगतां नाथः स
मस्तार्तिविनाशनः ३६ सारः सारप्रदः सौम्यः सं
सारार्णवतारणः संसारविषयाधीशः संसारवि
षयोज्झितः ३७ सादी सर्वसखा शार्ङ्गी शार्ङ्गपाणि
[illegible] संगोपी संगमी संगमाश्रितः ३[illegible]
प्रद्युम्नजितः सद्दृक्सत [illegible]

रकांतकः राघवोरावणारिश्चपरमेशःपुरातनः ३
वासुदेवोमरस्तुत्यःसंयमीयमिनांवरः भूदेवोभुव
नानंदीयशोदानंददायकः ४ मुंजकेशोमहावा
हुर्मुष्टिचाणूरमर्दनः त्रिविक्रमस्त्रिलोकेशस्त्रि
मूर्तिर्दीननायकः ५ भगवान्सर्वभूतेशःपरंव्र
ह्मपरात्परः विश्वात्मापुरुषःसाक्षाद्विश्वेशोवि
श्वतोमुखः ६ प्रतापवान्विश्वयोनिर्भूतात्माभू
तभावनः सात्विकोराजसस्तामसस्तामसानवा
न्मुनिः ७ भूतभव्यभवद्विश्वात्मादीनवंधुर्दयानिधि

३

व

हय० निर्गुणोनिर्ममोनित्यःकालात्माकरुणानिधिः ८ प्रजापतिर्वि
श्वबंधोयोगीकामीसोमयापहः अविचिंत्यप्रभुःश्रेष्ठःसुरे
शोभक्तवत्सलः ९ महार्तिदमनोदांतोनिश्चलोहृष्यरूप
हृक॥कालयोगीमहानादोविरूपाक्षोविकर्तनः १० ब्र
मचारीमहासत्योमहामोहनोहरिः गंभीरघोषोनि हा
र्घोषोध्रुवोदीनजनप्रियः ११ अपारमहिमायुक्तःस
र्वात्माकलिनाशनः ऋग्यजुःसामरूपश्चमंत्रेशस्तंत्र
नायकः १२ सर्वतत्वाश्रयःश्रेष्ठोभुक्तिमुक्तिप्रदायकः
मूर्तिमान्मूर्तिरहितोजगद्वासीजगत्पतिः १३ ज्ञानेशो
ज्ञानदोज्ञानसमानोज्ञानरूपधृक अनंतोनंतमहि

ले
मा॰ अंतवाकुरंपकः१४ अव्यक्तो व्यक्तरूपश्च दलेवा
सुरमर्द्दनः अग्निवधीरमानाथस्मरेण्णो मधुसूद
क२ नः१५ निर्विल्पो निरालंबः सर्वगः साधुवल्लभः
सर्वव्यापी च सर्वेसः सूक्ष्मरूपो निरंजनः१६ कुमु
दः कौस्तुभोरस्कः पुण्यश्रवणकीर्त्तनः विष्वक्से
नोव्ययः साक्षी शाश्वतः पुरुषोत्तरः१७ प्रजाप
तिर्विश्वरेताः प्राणदाता वृषाकपिः हिरण्य।
गर्भः सर्वादिरजो लोहितलोचनः१८ अनुत्तमः
सुराध्यक्षो लोकाध्यक्षो महाबलः प्रतिष्ठितः
स्कंधधरो वशश्रोता रिवाहनः१९ सर्वदृक्।

६

हयं० सुप्रसादश्चप्रसन्नात्माप्रसन्नधीः आवर्तनोत्तु

त्त ङ्कुश्चसिद्धार्थः सिद्धिसाधनः २० अच्युतश्चार

णः शौरिः शिवेद्धीवासवानुजः विष्णुतःसु

तपाः शास्तासुसिद्धः श्रुतिसागरः ११ विविक्तः

सिद्धसंकल्पः सत्यसत्यपराक्रमः श्वेतापतः प्र

23 काशात्मावर्द्धमानश्चतुर्भुजः २२ लीङ्गिपोमह

बुद्धिः सहस्रात्सहस्रपात श्रीनिवासोम

हामायोनिरुद्धोमोघशक्तिमत २३ अतुलः वी

मरूनुप्रोजगद्धेतुरधोक्षजः सुकृतः सर्व

दर्शीवसुव्रतः सात्वतांपतिः २४ कैवाङ्जि